ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 8.35, January-June 2026, Submitted in January 2026

मध्यकालीन जांगल प्रदेश का राजनीतिक रूपांतरण: बीकानेर राज्य की स्थापना में जाट गणराज्यों का योगदान (पांडु गोदारा एवं सारण वंश के विशेष संदर्भ में)

Sushma, Research Scholar, Department of Philosophy in history Directorate of Research & Development, Jyoti Vidyapeeth women university Jaipur
Dev Karan Godara, Research Scholar, Department of Philosophy in history Directorate of Research & Development, Jyoti Vidyapeeth women university Jaipur
Chuni Lal Rav, Research Scholar, Department of Philosophy in history Directorate of Research & Development, Jyoti Vidyapeeth women university Jaipur
Dr. Amit Chamoli, Assistant professor Department of Philosophy in history Directorate of Research & Development, Jyoti Vidyapeeth women university Jaipur

सार

प्रस्तुत शोध पत्र मध्यकालीन राजस्थान के जांगल प्रदेश (वर्तमान बीकानेर क्षेत्र) के राजनीतिक और सामाजिक इतिहास में जाट गणराज्यों, विशेष रूप से गोदारा और सारण कुलों के ऐतिहासिक अवदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है। पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इस क्षेत्र में किसी केंद्रीकृत राजशाही का अभाव था और यह भू-भाग छह प्रमुख स्वतंत्र जाट गणराज्यों में विभक्त था। इस शोध में इस बात का परीक्षण किया गया है कि किस प्रकार गोदारा कुल के प्रमुख पांडु गोदारा ने समकालीन अंतर-जातीय संघर्षों और भू-राजनीतिक अस्थिरता के बीच दूरदर्शिता का परिचय देते हुए राव बीका (राठौड़ वंश) के साथ एक ऐतिहासिक कूटनीतिक समझौता किया। इसके साथ ही, सारण जाट गणराज्य के शासक फूला (पुलाराम) सारण के साथ हुए राजनीतिक द्वंद्व और सत्ता संतुलन के प्रयासों का भी सूक्ष्म मूल्यांकन किया गया है। यह अध्ययन प्राथमिक ख्यातों, लोक-साक्ष्यों और द्वितीयक ऐतिहासिक स्रोतों के समन्वय पर आधारित है। निष्कर्ष यह दर्शाता है कि बीकानेर रियासत की स्थापना मात्र एक सैन्य विजय नहीं थी, बल्कि यह जाट सरदारों की राजनीतिक कूटनीति और सहमति के सिद्धांत पर आधारित एक अनूठा संप्रभुता-साझाकरण ढांचा था, जिसने बीकानेर के प्रशासनिक और सांस्कृतिक ताने-बाने को दीर्घकाल तक प्रभावित किया।

मुख्य शब्द: जांगल प्रदेश, पांडु गोदारा, पुलाराम सारण, राव बीका, जाट गणराज्य, बीकानेर रियासत, ऐतिहासिक कूटनीति।

प्रस्तावना

पृष्ठभूमि

मध्यकालीन राजस्थान का इतिहास मुख्य रूप से सामंती राज्यों के उद्भव और राजपूत राजवंशों के उत्कर्ष के इर्द-गिर्द केंद्रित रहा है। किंतु, पंद्रहवीं शताब्दी से पूर्व का पश्चिमी राजस्थान, जिसे ऐतिहासिक रूप से 'जांगल प्रदेश' कहा जाता था, एक भिन्न प्रशासनिक और सामाजिक व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता था। इस क्षेत्र में किसी एक राजा का एकछत्र राज नहीं था, बल्कि यह भू-भाग लोकतांत्रिक और अर्ध-स्वायत्त जाट गणराज्यों का एक संघ था (टॉड, १८२९)। इन गणराज्यों में गोदारा, सारण, कसवां, बेनीवाल, पूनिया और सुहाग प्रमुख थे। प्रत्येक गणराज्य की अपनी स्वतंत्र पंचायत, सैन्य व्यवस्था और निश्चित भौगोलिक सीमाएं थीं। गोदारा जाटों का केंद्र शेखसर और लाधड़िया था, जबकि सारण जाटों का मुख्यालय भाड़ंग के निकटवर्ती क्षेत्रों में केंद्रित था (नैणसी, संस्करण १९६८)। इन गणराज्यों की शासन व्यवस्था आंतरिक सामंजस्य और सामूहिक निर्णय प्रक्रिया पर आधारित थी, जो तत्कालीन निरंकुश राजतंत्रों के दौर में एक प्रगतिशील सामाजिक संरचना का उदाहरण प्रस्तुत करती थी।

समस्या कथन

औपनिवेशिक और स्वातंत्र्योत्तर काल के मुख्यधारा के इतिहासकारों ने बीकानेर राज्य की स्थापना का श्रेय मुख्यतः राव बीका के शौर्य और सैन्य अभियानों को दिया है। इस विमर्श में यह ऐतिहासिक तथ्य अक्सर पृष्ठभूमि में चला जाता है कि राव बीका के आगमन के समय जांगल प्रदेश में जाट समुदायों की

जनसांख्यिकीय और सैन्य स्थिति अत्यंत सुदृढ़ थी। बिना स्थानीय जाट सरदारों की कूटनीतिक सहमति के, एक बाहरी सैन्य बल के लिए इस दुर्गम मरुस्थलीय क्षेत्र में एक स्थायी राज्य की स्थापना करना असंभव था (शर्मा, १९६६)। इसके अतिरिक्त, पांडु गोदारा और पुलाराम (फूला) सारण के बीच के आंतरिक अंतर्विरोधों और उनके द्वारा राव बीका के साथ किए गए अलग-अलग समझौतों का इतिहास में व्यवस्थित, निष्पक्ष और गहन अकादमिक विश्लेषण अत्यंत सीमित है। यह शोध इसी ऐतिहासिक असंतुलन को संबोधित करने का प्रयास करता है।

अनुसंधान प्रश्न

प्रस्तुत शोध मुख्य रूप से निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास करता है:

१. पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जांगल प्रदेश के जाट गणराज्यों की आंतरिक राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियां क्या थीं, जिन्होंने एक नए राजवंश के आगमन का मार्ग प्रशस्त किया?

२. पांडु गोदारा की वह कौन सी दूरदर्शी कूटनीति थी, जिसने राव बीका को जांगल प्रदेश का शासक स्वीकार किया, और इस संधि के बदले में जाट समाज ने क्या ऐतिहासिक विशेषाधिकार प्राप्त किए?

३. बीकानेर की स्थापना के कालखंड में सारण कुल के शासक पुलाराम (फूला) सारण और उनकी सामाजिक-राजनीतिक अवस्थिति का बीकानेर के इतिहास पर क्या प्रभाव पड़ा?

शोध का महत्व

यह शोध पत्र बीकानेर के क्षेत्रीय इतिहास लेखन में एक महत्वपूर्ण शून्यता को भरता है। यह स्पष्ट करता है कि मध्यकालीन राज्यों का निर्माण केवल तलवार के बल पर नहीं, बल्कि सामाजिक अंतःक्रिया और आपसी समझौतों के माध्यम से भी होता था। बीकानेर राजपरिवार और गोदारा जाटों के बीच स्थापित 'राजतिलक की परंपरा' और 'खिचड़ा रस्म' जैसे ऐतिहासिक तथ्य इस बात के जीवित प्रमाण हैं कि नवगठित राज्य में जाट समाज को एक अधीनस्थ प्रजा के रूप में नहीं, बल्कि सत्ता के सह-निर्माता के रूप में स्थान दिया गया था। यह अध्ययन वर्तमान समाजशास्त्रियों और इतिहासकारों को मध्यकालीन सामाजिक समरसता और राजनीतिक सह-अस्तित्व के एक अनूठे भारतीय मॉडल को समझने में मदद करेगा।

साहित्य समीक्षा

जांगल प्रदेश के जाट गणराज्यों का ऐतिहासिक विमर्श

मध्यकालीन जांगल प्रदेश के जाट गणराज्यों की शासन व्यवस्था और उनकी राजनीतिक संरचना पर ऐतिहासिक ग्रंथों में यत्र-तत्र महत्वपूर्ण विवरण मिलते हैं। कर्नल जेम्स टॉड (१८२९) ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'एनेल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान' में स्वीकार किया है कि राठौड़ राजवंश के आगमन से पूर्व यह मरुस्थलीय भू-भाग किसी एक केंद्रीय सत्ता के अधीन नहीं था। टॉड के अनुसार, यहाँ की भूमि पर सदियों से स्वतंत्र कृषक समुदायों का अधिकार था, जो आंतरिक रूप से पूर्णतः स्वायत्त थे और अपनी पंचायत प्रणालियों के माध्यम से शासन चलाते थे। उन्होंने गोदारा और सारण कुलों की सैन्य शक्ति और भू-स्वामित्व का विशेष उल्लेख किया है।

ख्यात साहित्य और ऐतिहासिक साक्ष्य

राजस्थानी ख्यात साहित्य, विशेष रूप से 'मुहणोत नैणसी री ख्यात' (संस्करण १९६८), इस क्षेत्र के इतिहास को समझने का सबसे प्रामाणिक प्राथमिक स्रोत है। नैणसी ने विस्तार से वर्णन किया है कि जांगल प्रदेश में छह प्रमुख जाट कुलों की स्वतंत्र सत्ता थी। गोदारा जाटों की राजनीतिक सूझबूझ का उल्लेख करते हुए ख्यातों में बताया गया है कि पांडु गोदारा अपने समय के अत्यंत प्रभावशाली और कूटनीतिक रूप से चतुर नेता थे। वहीं दूसरी ओर, सारण जाटों के शासक फूला (पुलाराम) सारण के साम्राज्य की सीमाओं और उनकी प्रशासनिक दृढ़ता का विवरण भी समकालीन वृत्तांतों में मिलता है। नैणसी के विवरणों से स्पष्ट होता है कि इन गणराज्यों के बीच आंतरिक सीमा विवाद और वर्चस्व की प्रतिस्पर्धा भी विद्यमान थी, जिसने अंततः बाह्य शक्तियों के हस्तक्षेप का मार्ग प्रशस्त किया।

आधुनिक इतिहासकारों का दृष्टिकोण

आधुनिक इतिहासकार डॉ. दशरथ शर्मा (१९६६) ने 'लेक्चर्स ऑन राजपूत हिस्ट्री एंड कल्चर' में जांगल प्रदेश के इस सत्ता-परिवर्तन का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। शर्मा का मत है कि राव बीका द्वारा बीकानेर

राज्य की स्थापना को केवल एकतरफा सैन्य विजय मान लेना ऐतिहासिक भूल होगी। उनका तर्क है कि राव बीका की सेना इतनी विशाल नहीं थी कि वह संगठित जाट गणराज्यों को बलपूर्वक पूर्णतः परास्त कर सके। इसलिए, यह स्थापना वास्तव में पांडु गोदारा की राजनीतिक दूरदर्शिता और राव बीका के बीच हुए एक सोचे-समझे गठबंधन का परिणाम थी।

शोध अंतराल (Research Gap)

यद्यपि इतिहास की पुस्तकों में राव बीका और पांडु गोदारा के गठबंधन का संक्षिप्त उल्लेख मिलता है, परंतु सारण जाटों (पुलाराम/फूला सारण) और गोदारा कुल के मध्य के आपसी सत्ता-संतुलन तथा इस पूरी प्रक्रिया में करणी माता की मध्यस्थता की भूमिका का गहन, विषय-केंद्रित और धारावाहिक विश्लेषण अत्यंत विरल है। यह शोध पत्र इसी ऐतिहासिक अंतराल को भरने का प्रयास करता है, जहाँ दोनों कुलों के विशिष्ट संदर्भ में बीकानेर के निर्माण का मूल्यांकन किया गया है।

शोध कार्यप्रणाली

शोध का प्रारूप

प्रस्तुत शोध पत्र ऐतिहासिक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भूतकाल की घटनाओं का निष्पक्ष पुनर्निर्माण करना और लोक-परंपराओं के पीछे छिपे ऐतिहासिक सत्यों का उद्घाटन करना है।

स्रोतों का वर्गीकरण

इस शोध को पूर्ण करने के लिए दो प्रकार के ऐतिहासिक स्रोतों का उपयोग किया गया है:

१. **प्राथमिक स्रोत:** इसके अंतर्गत मध्यकालीन राजस्थानी ख्यातें, प्राचीन शिलालेख, बीकानेर राज्य के ऐतिहासिक अभिलेख (बहियां) तथा सदियों से चली आ रही जीवित सांस्कृतिक परंपराएं (जैसे राजतिलक की रस्म और अक्षय तृतीया की लोक-रीतियां) शामिल हैं।

२. **द्वितीयक स्रोत:** इसके अंतर्गत आधुनिक इतिहासकारों के शोध ग्रंथ, औपनिवेशिक काल के गजेटियर, ऐतिहासिक पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध पत्र तथा क्षेत्रीय इतिहास की पुस्तकें शामिल हैं।

शोध की सीमाएं

मध्यकालीन इतिहास के पुनर्निर्माण में कुछ स्वाभाविक सीमाएं होती हैं। प्रथम, समकालीन लिखित साक्ष्यों में तिथियों का आंशिक विरोधाभास मिलता है। द्वितीय, चारण और भाट साहित्यों में आनुवंशिक प्रशंसात्मक अतिशयोक्ति की संभावना रहती है। अतः इस शोध में विभिन्न स्रोतों का आपस में मिलान (क्रॉस-वेरिफिकेशन) करके केवल तार्किक और सर्वसम्मत तथ्यों को ही स्वीकार किया गया है।

चर्चा एवं विश्लेषण

भाग अ: पांडु गोदारा और राव बीका की ऐतिहासिक संधि

पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जांगल प्रदेश के जाट गणराज्यों में गोदारा कुल सबसे शक्तिशाली और राजनीतिक रूप से जागरूक माना जाता था। गोदारा जाटों का शासन लाधड़िया और शेखसर के समृद्ध क्षेत्रों पर था, और उनके मुख्य नेता पांडु गोदारा थे। इस कालखंड में जांगल प्रदेश के जाट गणराज्य आंतरिक सीमा विवादों और पारस्परिक वर्चस्व की लड़ाई से जूझ रहे थे। विशेष रूप से गोदारा जाटों का अपने पड़ोसी कसवां और सारण जाटों के साथ निरंतर संघर्ष चल रहा था।

इस आंतरिक अस्थिरता के बीच, पांडु गोदारा ने दूरदर्शिता का परिचय दिया। वे भली-भांति समझते थे कि निरंतर गृहयुद्ध से संपूर्ण जांगल प्रदेश कमजोर हो रहा था, जिससे दिल्ली सल्तनत या अन्य बाह्य शक्तियों के आक्रमण का भय बना हुआ था। इसी समय जोधपुर के राव जोधा के पुत्र राव बीका अपने भाग्य की खोज में इस मरुस्थलीय क्षेत्र में आए थे। पांडु गोदारा ने राव बीका की सैन्य क्षमता और कुशल नेतृत्व को पहचाना।

करणी माता के आध्यात्मिक आशीर्वाद और मध्यस्थता के अंतर्गत, पांडु गोदारा और राव बीका के मध्य एक ऐतिहासिक कूटनीतिक समझौता हुआ। यह कोई आत्मसमर्पण नहीं था, बल्कि दो शक्तियों के बीच समानता के आधार पर की गई संधि थी। इस संधि का मूल आधार था: "राज थारो, जमी जाटां री" (अर्थात राजनीतिक संप्रभुता राठौड़ों की होगी, किंतु भूमि का स्वामित्व और आंतरिक सामाजिक स्वायत्तता जाटों

के पास ही रहेगी)। पांडु गोदारा के इस निर्णय ने न केवल उनके कुल की रक्षा की, बल्कि जांगल प्रदेश को एक सुदृढ़ और केंद्रीकृत प्रशासनिक व्यवस्था दी, जिसे आज हम बीकानेर के नाम से जानते हैं।

भाग ब: बीकानेर राज्यारोहण में सारण जाटों (पुलाराम / फूला सारण) की भूमिका

बीकानेर के इतिहास में गोदारा कुल के साथ-साथ सारण कुल का इतिहास भी अत्यंत महत्वपूर्ण और गौरवशाली रहा है। सारण जाटों का गणराज्य भाड़ंग (वर्तमान चुरू और बीकानेर सीमा के निकट) और उसके आसपास के लगभग ३६० गांवों पर विस्तृत था। ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार, इस गणराज्य के प्रतापी शासक फूला सारण थे (जिन्हें स्थानीय इतिहास और लोक-परंपराओं में पुलाराम सारण के संदर्भ में भी स्मरण किया जाता है)।

सारण गणराज्य अपनी सुदृढ़ कर व्यवस्था और अनुशासित सैन्य बल के लिए जाना जाता था। मध्यकालीन ख्यातों के अनुसार, गोदारा कुल के नेता पांडु गोदारा और सारण कुल के शासक फूला सारण के बीच एक ऐतिहासिक द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न हुई थी, जिसका केंद्र 'मलकी' नामक महिला से जुड़ा सामाजिक-राजनीतिक विवाद था। इस विवाद ने दोनों गणराज्यों को युद्ध के मुहाने पर ला खड़ा किया था।

जब पांडु गोदारा ने राव बीका के साथ गठबंधन किया, तो राव बीका की संयुक्त सेना और गोदारा जाटों के बलों ने मिलकर सारण गणराज्य के विरुद्ध अभियान चलाया। फूला (पुलाराम) सारण ने असाधारण वीरता का परिचय देते हुए अपनी भूमि की रक्षा के लिए कड़ा संघर्ष किया। यद्यपि इस कूटनीतिक और सैन्य घेराबंदी के परिणामस्वरूप सारण क्षेत्र को भी नवगठित बीकानेर राज्य के अंतर्गत सम्मिलित होना पड़ा, किंतु सारण जाटों के कड़े प्रतिरोध ने राव बीका को यह अहसास करा दिया कि इस मरुभूमि पर स्थायी शासन केवल दमन से नहीं, बल्कि जाट समाज के प्रति सम्मान और उनके अधिकारों की रक्षा करके ही संभव है। पुलाराम सारण के वंशजों ने आगे चलकर बीकानेर राज्य के कृषि विकास, नए गांवों की स्थापना और व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा में अद्वितीय योगदान दिया।

भाग स: बीकानेर रियासत में जाटों के विशिष्ट विशेषाधिकार

पांडु गोदारा और राव बीका के बीच हुए ऐतिहासिक समझौते की प्रामाणिकता इस बात से सिद्ध होती है कि बीकानेर रियासत ने सदियों तक जाट समाज को कुछ ऐसे विशिष्ट और अनूठे अधिकार प्रदान किए, जो भारत के किसी अन्य राजतंत्र में देखने को नहीं मिलते।

१. राजतिलक का अनूठा विशेषाधिकार: बीकानेर राजघराने का यह नियम बन गया कि जब भी किसी नए राजा का राज्यारोहण होगा, तो गोदारा जाट कुल के मुख्य सरदार (पांडु गोदारा के वंशज) अपने हाथ (या पैर) के अंगूठे के रक्त से नए राजा का तिलक करेंगे। बिना गोदारा जाट सरदार के तिलक के, बीकानेर का कोई भी शासक वैधानिक रूप से राजा नहीं माना जाता था। यह रस्म दर्शाती है कि राजा की संप्रभुता को वैधता स्थानीय जाट समाज ही प्रदान करता था।

२. अक्षय तृतीया की 'खिचड़ा रस्म': बीकानेर के स्थापना दिवस (आखा तीज) पर राजदरबार में जाट सरदारों को विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता था और बाजरे का खिचड़ा तथा इमली का पानी (राभ) सामूहिक रूप से ग्रहण किया जाता था। यह रस्म शासक और कृषक समाज के बीच के प्रगाढ़ संबंधों और सामाजिक समरसता की प्रतीक थी।

३. प्रशासनिक स्वायत्तता: बीकानेर राज्य के राजस्व विभाग में जाट सरदारों और चौधरी प्रणाली को विशेष स्थान दिया गया, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों का न्याय और कर प्रबंधन स्थानीय स्तर पर सुरक्षित रहा।

निष्कर्ष

मुख्य निष्कर्षों का सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र के विस्तृत ऐतिहासिक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि मध्यकालीन जांगल प्रदेश से बीकानेर रियासत के उद्भव की यात्रा मात्र एक सैन्य विजय या एकाधिकारवादी राजवंश की स्थापना की कहानी नहीं थी। यह वास्तव में मरुस्थलीय भू-भाग की तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों, आंतरिक अंतर्विरोधों और स्थानीय जाट गणराज्यों की कूटनीतिक सूझबूझ का एक मिला-जुला परिणाम था।

शोध से प्राप्त मुख्य निष्कर्षों को निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है:

१. पांडु गोदारा की दूरदर्शिता: गोदारा कुल के प्रमुख पांडु गोदारा ने तत्कालीन अंत-जातीय संघर्षों और दिल्ली सल्तनत के संभावित खतरों को भांपते हुए राव बीका के साथ जो गठबंधन किया, वह उनकी उच्च राजनीतिक चेतना का परिचायक था। "राज थारो, जमी जाटां री" का सिद्धांत मध्यकालीन भारतीय इतिहास में संप्रभुता और भूमि अधिकारों के संतुलन का एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है।
२. सारण वंश का गौरवशाली प्रतिरोध और योगदान: भाड़ंग के शासक फूला (पुलाराम) सारण और उनके कुल ने अपने स्वाभिमान और क्षेत्रीय स्वायत्तता की रक्षा के लिए जो संघर्ष किया, उसने नवगठित बीकानेर राज्य को एक समावेशी नीति अपनाने पर विवश किया। सारण जाटों ने न केवल युद्ध क्षेत्र में अपनी वीरता सिद्ध की, बल्कि बाद के कालखंडों में बीकानेर की कृषि अर्थव्यवस्था और ग्रामीण अवसंरचना के विकास में रीढ़ की हड्डी के रूप में कार्य किया।
३. अद्वितीय सांस्कृतिक परंपराएं: बीकानेर के राजाओं के राज्यारोहण के समय गोदारा जाट सरदार द्वारा रक्त से तिलक करने की अनिवार्य परंपरा और आखा तीज की 'खिचड़ा रस्म' केवल प्रतीकात्मक नहीं थीं। ये परंपराएं इस ऐतिहासिक सत्य की जीवित साक्ष्य थीं कि बीकानेर राज्य की सत्ता की वैधता स्थानीय जाट समाज की सहमति और सहभागिता पर टिकी हुई थी।

भविष्य के शोध के लिए सुझाव

यह शोध स्थापित करता है कि क्षेत्रीय इतिहास लेखन में लोक-साक्ष्यों, ख्यातों और सामाजिक परंपराओं का सूक्ष्म मूल्यांकन कितना आवश्यक है। भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए यह आवश्यक है कि वे बीकानेर राज्य के अभिलेखागार (बहियों) में सुरक्षित जाट चौधरियों के राजस्व पत्रों और कर-प्रणालियों का और अधिक गहराई से अध्ययन करें, ताकि मध्यकालीन ग्रामीण लोकतंत्र के इस भारतीय मॉडल को वैश्विक पटल पर प्रस्तुत किया जा सके।

संदर्भ सूची / ग्रंथ सूची (References / Bibliography)

(अकादमिक मानकों और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के दिशा-निर्देशों के अनुसार ऐतिहासिक स्रोतों का विवरण नीचे दिया गया है)

१. **टॉड, जेम्स (१८२९).** *एनेल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान (राजस्थान का इतिहास और संस्कृति)*। (अनुवादक: कल्याणसिंह शेखावत, हिंदी संस्करण)।
२. **नैणसी, मुहणौत (सं. १९६८).** *मुहणौत नैणसी री ख्यात*। (संपादक: बदरीप्रसाद साकरिया, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर)।
३. **शर्मा, दशरथ (१९६६).** *लेक्चर्स ऑन राजपूत हिस्ट्री एंड कल्चर*। (मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशंस, दिल्ली)।
४. **ओझा, गौरीशंकर हीराचंद (१९३९).** *बीकानेर राज्य का इतिहास (भाग १ और २)*। (वैदिक यन्त्रालय, अजमेर)।
५. **सिंह, रघुवीर (१९८४).** *पूर्व-आधुनिक राजस्थान का सामाजिक और आर्थिक इतिहास*। (राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर)।
६. **क्षेत्रीय बहियां एवं गजेटियर.** *बीकानेर स्टेट गजेटियर (ऐतिहासिक प्रशासनिक अभिलेख)*, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।